वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 121 | मंगलवार 29 अगस्त 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

60 साल जयपुर तमाशा और थिएटर को दिए

डेजर्ट सोल्स सीरीज में वासुदेव भट्ट बोले अभिनय मेरे लिए पूजा की तरह

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान फोरम की डेजर्ट सोल्स सीरीज में प्रदेश के जाने-माने नाट्य लेखक, निर्देशक, फिल्म एवं रंगमंच अभिनेता और तमाशा गुरु वासुदेव भट्ट शहर के संस्कृति प्रेमियों से रूबरू हुए। इस मौके पर वरिष्ठ रंगकर्मी राजेन्द्र सिंह पायल ने विभिन्न रोचक सवालों के जरिए वासुदेव भट्ट की साठ वर्ष से भी अधिक रंगमंच, फिल्म और तमाशा साधना की यात्रा में आए विभिन्न पड़ावों और वासुदेव द्वारा इस क्षेत्र में किए गए कार्यों को वहां मौजूद श्रोताओं के समक्ष रखा। सीरीज में राजस्थान की उन हस्तियों के कृतित्व पर चर्चा की जाती है, जिन्होंने राजस्थान में ही रहकर जीवन पर्यन्त उल्लेखनीय कार्य किया है। डेजर्ट सोल सीरीज राजस्थान फोरम की पहल है, जिसका आयोजन आईटीसी राजपूताना के सहयोग से किया जाता है और ये सीरीज श्री सीमेंट के सीएसआर इनिशिएटिव के तहत सपोर्टेड है। वासुदेव ने कहा कि पांच/छः वर्ष के थे, तभी से हम कानों में तमाशा शैली के पद सुनते आ रहे हैं। गोपीनाथ भट्ट और कथावाचक राधेश्याम के भागवत के नाटकों में आठ वर्ष की उम्र से ही अभिनय शुरू किया। सत्रह वर्ष की उम्र तक आते-आते लगा कि अब तो अभिनय के लिए मुंबई जाना हैं, लेकिन पिताजी ने बीकानेर में नौकरी लगवा दी। अभिनय का कीड़ा मुझे हमेशा काटता रहा और यही वजह रही की बीकानेर में एक नाटक में अभिनय करने का मौका मिला तो उसमें ऐसा प्रदर्शन किया की प्रथम पुरस्कार मिला। जयपुर वापस आने के बाद आकाशवाणी में ऑडिशन दिया। वहीं से मुंबई जाकर अभिनय करने का मौका मिला और वहां भी प्रथम पुरस्कार मिला। वासुदेव ने बताया कि दक्षिण भारत से पिता के दादा बंशीधर भट्ट अपने पिता के साथ उत्तर भारत की तरफ आए। बाद में राजघरानें में बंशीधरजी को दरबारी गायक नियुक्त किया, पर उनके मन में हमेशा रहा कि उनकी यह कला आम लोगों तक पहुंचे। फिर उन्होंने इन पारंपरिक गाथाओं को प्रश्न-उत्तर की भाषा में पदों के जरिए सबके समक्ष प्रस्तुत किया और इस तरह तमाशा का प्रचलन शुरू हुआ। यह तमाशा शैली धीरे-धीरे मॉडर्न थिएटर से भी जुड़ने लगी।

दस साल में सबसे कमजोर मानसून

अगस्त में बारिश 114 मिमी, बरसा केवल 30.92 मिमी

जयपुर. शाबाश इंडिया

इस बार मानसून जून-जुलाई में जितना बरसा, अगस्त में उतना ही कमजोर रहा। जुलाई आखिर तक के आंकड़ों से लग रहा था, इस बार भी औसत से ज्यादा बारिश होगी, लेकिन एकदम उल्टा हुआ। दस साल में पहली बार सबसे कम बारिश इस अगस्त में हुई। मानसून सीजन के दौरान अगस्त में औसत बारिश का आंकड़ा 114 मिमी है, जबकि इस बार केवल 30.92 मिमी ही पानी बरसा। मौसम विभाग ने आगे सितंबर के पहले हफ्ते तक कोई नया सिस्टम एक्टिव नहीं होने के आसार जताए हैं। इससे बारिश कम और पारा बढ़ेगा। बीते 4-5 दिन में अधिकतम तापमान 5 डिग्री तक बढ़कर 35 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। इस पूरे सीजन में अब तक कुल 452.04 मिमी बारिश हो चुकी है जो कि औसत से केवल 2.6 फीसदी ज्यादा है।

आगे बारिश की संभावना कम

मानसून ट्रफ लाइन अभी हिमालय से होकर गुजर रही है। एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन उत्तर-पूर्वी भारत की तरह बना हुआ है। इससे वर्तमान में उत्तराखंड, बिहार, यूपी के कुछ हिस्से और हिमाचल प्रदेश के अलावा नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों में बारिश हो रही है। राजस्थान समेत मध्य भारत के कई हिस्सों में अभी कोई वेदर सिस्टम एक्टिव नहीं है। इससे यहां अगले एक सप्ताह तक अच्छी बारिश नहीं होगी।

कांग्रेस की स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक शुरू

बड़े अंतर से हारे प्रत्याशियों के टिकट कटेंगे, पूर्व सांसदों को मैदान में लाने की भी तैयारी

जयपुर. कासं। कांग्रेस सितंबर में टिकट घोषित करने की तैयारी कर रही है। प्रदेश चुनाव समिति के बाद अब स्क्रीनिंग कमेटी ने सोमवार को इसको लेकर काम शुरू कर दिया है। कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष और सदस्य अगले चार दिन तक लगातार बैठकें करके उम्मीदवार चयन पर फीडबैक लेंगे। अस्पताल रोड स्थित कांग्रेस वॉर रूम में हुई स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक और इसके बाद वन टू वन फीडबैक में वरिष्ठ नेताओं ने उम्मीदवार चयन के मापदंडों पर खुलकर सुझाव दिए। बैठक में यह सुझाव आया कि पिछली बार बड़े अंतर से हारने वाली सीटों पर इस बार उम्मीदवार बदले जाने चाहिए। नेताओं ने पूर्व सांसदों को भी विधानसभा चुनाव लड़ाने का सुझाव दिया है।

स्क्रीनिंग कमेटी 31 तक टिकटों पर वन टू वन फीडबैक लेगी: स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष गोरव गोगोई, मेंबर गणेश गोडियाल और अभिषेक दत्त 31 अगस्त तक रोज संभाग वार नेताओं की बैठकें करेंगे। कमेटी की सोमवार को प्रदेश चुनाव समिति के नेताओं के साथ अस्पताल रोड स्थित कांग्रेस वॉर रूम में लंबी चर्चा हुई। स्क्रीनिंग कमेटी अध्यक्ष का यह पहला राजस्थान दौरा है।

मंत्री महेश जोशी और मुरारी मीणा का ईआरसीपी को मुद्दा बनाने का सुझाव: मंत्री महेश जोशी और मुरारीलाल मीणा ने बैठक में कहा- ईस्टर्न कैनल प्रोजेक्ट को राष्ट्रीय परियोजना का दर्जा नहीं देने को चुनावी मुद्दा बनाया जाए। पूर्वी राजस्थान में 82 सीटें हैं। ईआरसीपी का मुद्दा अगर हमने तरीके से उठाया तो 82 सीटों पर यह गेम पलट सकता है। पूर्वी राजस्थान में अभी से ही कार्यकर्ताओं और नेताओं को इसे लेकर टास्क दिया जाए।

उम्मीदवारों की स्क्रूटनी पर ज्यादा फोकस: कांग्रेस वॉर रूम में स्क्रीनिंग कमेटी को प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और वरिष्ठ नेताओं ने टिकटों के पैनल और अब तक की गई एक्सरसाइज के बारे में जानकारी दी। ब्लॉक और जिला स्तर से आए दावेदारों के पैनल पर चर्चा हुई। इस बार प्रदेश चुनाव समिति अपने स्तर पर उम्मीदवारों की स्क्रूटनी पर ज्यादा फोकस करेगी। इससे स्क्रीनिंग कमेटी का काम आसान हो जाएगा। कमेटी सितंबर के पहले सप्ताह तक पहले फेज में घोषित होने वाले उम्मीदवारों के नाम सेंट्रल इलेक्शन कमेटी को भेजने की तैयारी में जुटी है।

भू-गर्भ से अवतरित भगवान आदिनाथ का आठवां प्रादुर्भाव दिवस धूमधाम से मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। खो नागोरियान स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर शांतिनाथ जी की खोह में 2015 में भूगर्भ से अवतरित अतिशय कारी भगवान आदिनाथ की प्रतिमा का आठवां प्रादुर्भाव दिवस भक्ति भाव से मनाया गया। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस मौके पर दो दिवसीय आयोजन किया गया। पहले दिन भगवान की महाआरती एवं 48 दीपकों द्वारा ऋद्धि मंत्रों से युक्त भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान किया गया। दूसरे दिन प्रातः मंत्रोच्चार से भगवान के जलाभिषेक एवं पंचामृत अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। तत्पश्चात सौधर्म इन्द्र कमल -मंजू वैद के नेतृत्व में भगवान आदिनाथ पूजा विधान का संगीतमय आयोजन किया गया। इस मौके पर मण्डल पर मंत्रोच्चार करते हुए इन्द्र -इन्द्राणियों द्वारा अष्ट द्रव्य के अर्घ्य चढ़ाएं गये। संगीतकार नरेन्द्र जैन एण्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत भक्ति संगीत पर महेन्द्र -माया साह आबूजीवाले,विनोद -दीपिका जैन कोटखावदा, मनीष -रचना बैद, चेतन -मीनू जैन निमोडिया, दीपक -दीपा गोधा , भागचन्द -रेखा पाटनी सहित समाजसेवी राजीव -सीमा जैन गाजियाबाद, विनय -स्नेह लता सोगानी, मनोज सोगानी सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भक्ति नृत्य किए। अन्त में महाअर्घ पश्चात महाआरती की गई। इस मौके पर सुभाष चन्द जैन, राज कुमार कोठ्यारी,प्रदीप जैन, नरेश मेहता,एम पी जैन,सी एस जैन, भारतभूषण जैन,राकेश गोधा, नरेश बाकलीवाल,आशीष जैन, मुकेश पाटनी, दिपेश छाबड़ा , अमन जैन पत्रकार सहित बड़ी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजन शामिल हुए।

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल द्वारा अपनी मासिक मीटिंग संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल द्वारा अपनी मासिक मीटिंग केशव विहार, गोपालपुरा बाईपास पर आयोजित की गई, जिसमे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। अगस्त माह में किये गए सेवा कार्यों के लिए सभी का आभार व्यक्त किया गया व आगामी दिवसों में किये जाने वाले सेवा कार्यों की रूपरेखा तैयार की गई। चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग पर सभी ने एक-दूसरे को बधाई दी व खुशी जाहिर की।

क्रिकेट अवार्ड सेरमनी और अंताक्षरी का हुआ आयोजन

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। जैन सोशल ग्रुप नवकार,सनशाइन और स्पार्कल के संयुक्त तत्वाधान में JSGPL 10 दस का दम का आयोजन किया गया जिसमे खेले गए सभी 26 मैच के मैन ऑफ द मैच और टूर्नामेंट की विजेता और उपविजेता टीमों को ट्रॉफी देकर नवाजा गया। साथ ही तीनो संस्था के द्वारा एक अंताक्षरी का आयोजन किया गया जिसमे तीनो की संस्था की कुल 12 टीमों ने हिस्सा लिया। अंताक्षरी में सनशाइन की टीम गदर ने पहला , सनशाइन की टीम बाहुबली ने दूसरा और स्पार्कल की टीम गोलमाल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। अंताक्षरी के कार्यक्रम ने निर्णायक ब्यावर के सुप्रसिद्ध गायक अंकित तिवारी रहे। साथ क्रिकेट टूर्नामेंट की विजेता टीम टीम थंडर्स जिसके कप्तान पंकज डेढिया और उपविजेता टीम टीम स्ट्राइकर्स जिसके कप्तान आशीष रांका को ट्रॉफी दी गई। क्रिकेट टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज लवीश लोढ़ा, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज अमित जैन, उभरते खिलाड़ी का खिताब मोहित खेतपालिया, सबसे महत्वपूर्ण खिलाड़ी सुमित डोसी और टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए कमलेश मेहता को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब दिया गया। इस कार्यक्रम की एक विशेष बात ये रही की अंताक्षरी की विजेता टीम टीम गदर ने जीत में मिली राशि को जीवदया के कार्यक्रम में देने की घोषणा की। इस कार्यक्रम में तीनो संस्था नवकार के अध्यक्ष गौरव ओस्तवाल, सनशाइन अध्यक्ष विक्रम सांखला, स्पार्कल अध्यक्ष मोहित कुमठ एवम सभी पदाधिकारी और गणमान्य सदस्य, महिलाएं और बच्चे उपस्थित थे।

जल का सदुपयोग करते हुए दुरूपयोग को रोकें: आचार्य श्री आर्जव सागर जी

सात सौ श्री फलों से होगी अक्पनाचार्य आदि मुनि राजो की आराधना: विजय धुर्रा

आज निर्वाण कल्याणक महोत्सव पर होगा लाडू समर्पित

अशोक नगर. शाबाश इंडिया। जल का सदुपयोग करना सीखे आप सम्पन्न है आज आपके पास सम्पन्नता है तो आपको जल की कीमत समझ में नहीं आ रही हम साधु पैदल विहार करते रहते हैं तो देखते हैं कि पानी भरने के लिए लम्बी लम्बी लाइने लगी रहती है यहां तक कि आपस में झगड़े हो जाते हैं सिर्फ पानी के कारण और हमारा ध्यान ही नहीं है और हम जल को बरबाद करते चले जा रहे हैं ।जल भी जीव है हमें इस बात का ज्ञान ही नहीं है आज आपके पुण्य का उदय है इसलिए आपको सब सुविधाएं मिल रही है लेकिन आप सोचें कि जो लोग अभाव में जी रहे हैं उनको कितनी परेशानी हो रही है आपके जीवन में इस तरह के अभाव ना आये इसके लिए हम जल के दुरूपयोग को रोकें उक्त आश्य के उद्गार आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ने सुभाषगंज में धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

महा मुनिराजो की आराधना के साथ निर्वाण लाडू चढ़ेगा

समारोह को सम्बोधित करते हुए मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि आचार्य श्री आर्जव सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में वात्सल्य पर्व रक्षाबंधन पर सात सौ मुनि राजों की संगति के साथ महा आराधना के साथ ही भगवान श्री श्रेयांस नाथ स्वामी के निर्वाण कल्याणक की पूजा होती साथ ही आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की पूजन के साथ ही अक्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनि राजों के चरणों समाज जनों द्वारा सामूहिक रूप से सात सौ श्रीफल समर्पित किए जायेंगे साथ ही सोलह कारण विधान हेतु पंचायत कमेटी के महामंत्री राकेश अमरोद व प्रमोद मंगलदीप के पास अपने नाम प्रस्तुत किए जा सकेंगे इस अवसर पर आर्जव वाणी के सम्पादक डॉ सुधीर कुमार ने अपने विचार रखे उनका सम्मान समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई सहित अन्य अधिकारी ने किया

हरियाली देखने को हमारी आंखें देखना चाहती है

उन्होंने कहा कि आज हमारी आंखे हरियाली देखने को आतुर रहती है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी दंतोन करते थे एक दिन दंतोन के लिए किसी ने नीम के पेड़ की पूरी डालीं तोड़ कर एक छोटी सी दंतोन गांधी जी को दी तो गांधी जी ने कहा कि भाई इतनी बड़ी डाल क्यों तोड़ दी उन्होंने इसकी सीख दी और अनर्थदण्य से अवगत कराया इसलिए हमें छोटी छोटी बातें का ध्यान रखना चाहिए जल वायु पेड़ पौधों में भी जान होती है वैज्ञानिकों ने इसे सिद्ध किया है ये सब चीजें करूणा की है एक वैष्णव साधु ने इतना तक कहा कि जैन साधु की तपस्या बहुत कठिन है वे तन से तपस्या करते हुए आपको दिख जाते हैं लेकिन हमने महसूस किया कि वे तो मन से भी हिंसा की बात सोचते भी नहीं है ये बहुत कठिन है और वे करते हैं ये बहुत दुर्लभ है।

नवीन जिला दूदू पुलिस अधीक्षक पूजा अवाना का किया सम्मान

फागी कस्बे के आमजन की समस्याओं से कराया अवगत

फागी. शाबाश इंडिया। व्यापार महासंघ के अध्यक्ष कुलदीप श्रीमाल की अगुवाई में व्यापार महासंघ की कार्यकारिणी ने नवीन जिला पुलिस अधीक्षक पूजा अवाना को फागी कस्बे के थाना परिसर में उनके कर कमलों में पुष्पगुच्छ भेंट कर शाल ओढ़ाकर सम्मान किया, कार्यक्रम में व्यापार महासंघ कार्यकारिणी ने मुलाकात कर कस्बे की अनेक समस्याओं से अवगत कराया, व्यापार महासंघ के अध्यक्ष कुलदीप श्रीमाल ने अवगत कराया कि फागी कस्बे में आये दिन जाम लगता रहता है, जाम की स्थिति में फागी कस्बे का व्यापार चौपट हो गया है, साथ बताया ही कस्बे में यातायात पुलिस कर्मी लगाने की सख्त जरुरत है,तत्कालीन पुलिस अधीक्षक शंकर दत्त शर्मा एवं मनीष अग्रवाल सहित अन्य पुलिस अधिकारियो को भी इस विषय में अवगत कराया गया था लेकिन बार बार यही कहा जाता है कि हमारे पास जाप्ता नहीं है, अतः आपसे निवेदन है कि कस्बे में जाप्ता उपलब्ध करवाया जाय, महासंघ के प्रवक्ता राजाबाबु गोधा एवं उपाध्यक्ष,महामंत्री, गिर्राज भाखर, एवं अनिल जैन ने अवगत कराया कि कस्बे में समय समय पर शांति समिति की मिटिंग आयोजित की जावे, पुलिस मित्र बना कर सहयोग लिया जाये, ताकि आमजन में एवं पुलिस में सामंजस्य स्थापित हो ओर अपराधियों में खौफ हो, कस्बे में पुलिस गश्त भी बढाई जावे ताकि अपराधों की कमी आवे, साथ ही समय समय पर आम जन से रुबरु होकर सामंजस्य स्थापित करने की शक्त जरूरत है, इसी कड़ी में पुलिस उपधीक्षक जुल्फिकार अली,तत्कालीन थानाधिकारी श्री भंवरलाल वैष्णव, एवं वर्तमान नवीन पद स्थापित थानाधिकारी जयप्रकाश जी का साफा पहनाकर स्वागत किया।

श्रावण माह के अंतिम सोमवार को शिवालयों में उमड़ा भक्तों का जनसैलाब

हर हर महादेव ओम नमः शिवाय से गुंजायमान हुआ शिवालय

अमन जैन कोटखावदा. शाबाश इंडिया

जयपुर। श्रावण मास के अंतिम सोमवार को प्रतापनगर के शिव मंदिर में भक्तों का जनसैलाब उमड़ा। श्रद्धालुओं ने प्रातः कालीन बैला से ही भगवान शंकर के शिवालयों में मंत्रों के साथ पूजा अर्चना की।शिवालयों में दिनभर पूजा पाठ व अनुष्ठान के कार्यक्रम आयोजित हुए।अमन जैन कोटखावदा ने बताया कि मंदिर जी में ओम नमः शिवाय व महामृत्जुंजय के श्लोक से पुरा वातावरण गुंजायमान हो उठा। समाजसेवी पारस जैन के नेतृत्व में शिवलिंग की पूजा अर्चना की साथ ही बिल पत्र,धतूरे के पुष्प अर्पित किए और जल,दुध,दही, शहद आदि से मंत्रोच्चारण के साथ पंचामृत अभिषेक किया गया।श्रद्धालुओं ने शिव की आराधना की एवं क्षेत्र की खुशहाली की कामना की।

वेद ज्ञान

आचार विचार का अर्थ

सादा जीवन, उच्च विचार का अर्थ यही है कि मनुष्य के स्वभाव में सादगी हो, लेकिन विचार उच्च होने चाहिए। जो व्यक्ति अपनी धन-संपदा, वैभव व ज्ञान का दिखावा करता है, वास्तव में वह महाअज्ञानी होता है। धन या ज्ञान से समृद्ध होने के बाद तो व्यक्ति का स्वभाव फल लगे वृक्ष की तरह हो जाना चाहिए। जिस तरह वृक्ष पर जब फल लगते हैं तो वह नीचे की ओर झुक जाता है, उसी प्रकार ज्ञान व धन प्राप्त करने के बाद मनुष्य को भी विनम्र हो जाना चाहिए। अपने जीवन में सादगी को अपनाना और तुच्छ विचारों का त्याग करना मनुष्य का महान गुण है, जबकि स्वयं पर गर्व या अभिमान करना उसका सबसे बड़ा अवगुण है। हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने अहंकार व स्वार्थ को त्यागकर विनम्रता, त्याग और परोपकार जैसे गुणों को आत्मसात करे। किसी ने चाहे कितने ही शास्त्र क्यों न पढ़े हों, लेकिन जब तक वह उनके ज्ञान को अपने आचरण में नहीं उतारता है तो उसका शास्त्र पढ़ने का कोई फायदा नहीं है। मनुष्य का आचरण ही उसे महान बनाता है, क्योंकि अच्छे आचरण से उसमें उच्च विचार जन्म लेते हैं और ये विचार ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। हमारे मन-मस्तिष्क में जैसे विचार आएंगे, हमारे कर्म भी वैसे ही होंगे। बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध का जन्म राजवंश में हुआ था, लेकिन अपने आचार-विचार से वह एक शासक नहीं, बल्कि संन्यासी थे। वह अपने परिवार सहित सारा राजपाट त्यागकर युवावस्था में ही बोध और मोक्ष की तलाश में घर से निकल गए थे। महात्मा बुद्ध का कहना था कि सभी गलत कार्य हमारे मन से ही उपजते हैं। अगर मन परिवर्तित हो जाए तो गलत कार्य भी नहीं होंगे। हमारा मन ही हमें यहां-वहां भटकाता रहता है और वह कभी सही को गलत तो कभी गलत को सही साबित करता है। इसलिए जो व्यक्ति अपने मन को साध लेता है, वह कभी गलत कार्य नहीं करता। मनुष्य में विनय, सहिष्णुता, साहस, चरित्र-बल आदि गुणों का विकास होना अति आवश्यक है, क्योंकि इनके बिना उसका जीवन सफल नहीं हो सकता। जिस तरह भूमि की उर्वरता का पता बोए गए बीज से लगता है, उसी प्रकार व्यक्ति के आचार-विचार से उसकी कुलीनता का पता चलता है।

संपादकीय

शिक्षण संस्थानों में अभी दूर है मानवीयता को मूल्य बनाने का सफर

उत्तर प्रदेश में मुजफ्फरनगर के एक स्कूल में एक बच्चे की पिटाई का मामला स्तब्ध कर देने वाला है। खबरों के मुताबिक, निजी स्कूल में प्राथमिक कक्षा के एक विद्यार्थी की गलती सिर्फ इतनी थी कि वह पहाड़ा याद करके नहीं आया था। इतने भर के लिए शिक्षिका ने अन्य बच्चों से बारी-बारी थप्पड़ लगवाया। जो बच्चा धीरे से मार रहा था, उसे और जोर से थप्पड़ मारने को कहा। पीड़ित बच्चे के रोने के बावजूद कक्षा के बाकी बच्चों ने शिक्षिका का आदेश पूरा किया। इस घटना में ज्यादा आपत्तिजनक पहलू यह भी सामने आया कि शिक्षिका ने पिटाई खा रहे बच्चे की धार्मिक पृष्ठभूमि और पहचान को लेकर भी अवांछित टिप्पणी की। मामले ने तूल तब पकड़ा जब कक्षा में इस घटना का किसी ने वीडियो बना लिया और उसे प्रसारित कर दिया। हालांकि वीडियो के सामने आने पर शिक्षिका ने अपने बचाव में दलील दी और पुलिस ने वीडियो सहित पूरे मामले की जांच कराने की बात कही है। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद यही इस घटना के कानूनी निष्कर्ष तक पहुंचने का रास्ता होगा। मगर सच यह है कि घटना का जितना भी हिस्सा सामने आ सका है, वह बताता है कि हमारे शिक्षा संस्थानों में बेहतर पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ मानवीयता को एक मूल्य बनाने का सफर अभी बहुत लंबा है। सवाल है कि सिर्फ कोई पाठ याद न कर पाने की वजह से किसी शिक्षक को यह अधिकार कहां से मिल जाता है कि वह बच्चे के साथ इस तरह पेश आए। इस मामले में कानूनी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है और सर्वोच्च न्यायालय तक का साफ निर्देश है कि किसी भी स्थिति में बच्चे की पिटाई गैरकानूनी है। यहां तक कि उसके साथ डांट-फटकार भी नहीं की जा सकती। इसके बावजूद बहुत सारे शिक्षकों को इन निर्देशों पर गौर करना जरूरी नहीं लगता है। जबकि स्कूल और कक्षा में शिक्षक के व्यवहार को लेकर अगर कानूनी मानदंड तय किए जाते हैं तो यह अपने आप में एक अफसोसनाक पहलू है। इसके अलावा, सुर्खियों में आए वीडियो में शिक्षिका जो कहती दिखाई देती है, उससे जाहिर है कि वह न तो शिक्षण के लिए योग्य है और न ही उसमें मानवीय संवेदना के तत्त्व बचे हैं। यों भी, स्कूली शिक्षा के दौरान अगर कोई बच्चा पढ़ाई-लिखाई के मामले में पीछे रह जाता है, तो यह मुख्य रूप से शिक्षकों की ही नाकामी है। पर अपने दायित्व को ठीक से न निभा पाने की भरपाई के लिए कई बार शिक्षक विद्यार्थियों को ही जिम्मेदार ठहरा देते हैं। ताजा घटना का सबसे चिंताजनक पहलू बच्चे के साथ हुए दुर्व्यवहार का तरीका है। यह कल्पना भी बेहद तकलीफदेह है कि जिस बच्चे को उसके सहपाठी थप्पड़ मार रहे थे, उसके कोमल मन-मस्तिष्क पर कितना गहरा मनोवैज्ञानिक आघात लगा होगा और भविष्य में वह स्कूल, कक्षा और बाकी बच्चों को लेकर किस हद तक सामान्य तरीके से सोच पाएगा फिर शिक्षक के कहने पर थप्पड़ लगा रहे अन्य बच्चों के भीतर कैसा मानस तैयार होगा? अगर धर्म, जाति या वर्ग के आधार पर शिक्षक भी अपना बर्ताव तय करने लगेंगे और अन्य बच्चों को भी उसमें शामिल करेंगे तो जो समाज तैयार होगा, वह कितना मानवीय होगा? -**राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

गवर्नर से तकरार

अब पंजाब में भी लगभग वही स्थिति है, जो कुछ वर्षों से दिल्ली में बनी हुई है। पंजाब में मुख्यमंत्री और राज्यपाल के बीच अक्सर तकरार होती रहती है। मगर अब स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने मुख्यमंत्री भगवंत मान को चेतावनी दे दी कि वे राज्य में राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकते हैं। कोई भी राज्यपाल ऐसा कदम तब उठाता है, जब राज्य में संवैधानिक तंत्र विफल नजर आने लगता है, वहां की सरकार कानून-व्यवस्था संभालने में लाचार हो जाती है। दरअसल, राज्यपाल मुख्यमंत्री से इसलिए खफा हैं कि वे उनके सवालों का जवाब नहीं देते। इस साल फरवरी में जब पंजाब सरकार ने स्कूलों के छत्तीस प्रधानाचार्यों को प्रशिक्षण के लिए सिंगापुर भेजा था, तब भी राज्यपाल ने मुख्यमंत्री से कड़ा सवाल पूछा था कि किस अधिकार से उन्होंने प्रधानाचार्यों को सिंगापुर भेजा। इसके जवाब में मुख्यमंत्री मान ने उनके राज्यपाल पद पर नियुक्ति को ही प्रश्नांकित कर दिया था। ऐसे ही तल्खी भरे बयान दोनों तरफ से जब-तब आते रहते हैं। अभी जब राज्यपाल ने राष्ट्रपति शासन की चेतावनी दी, तो मान ने प्रेस वार्ता करके कहा कि इन्हें कानून-व्यवस्था की समस्या सिर्फ पंजाब में दिखाई देती है। पड़ोसी राज्य हरियाणा के नूंह में किस तरह हिंसा हुई, किस तरह मणिपुर महीनों से जल रहा है, वह दिखाई नहीं देता। पंजाब के राज्यपाल की इस चेतावनी के बाद स्वाभाविक रूप से फिर एक बार राज्यपालों की नियुक्ति, उनके अधिकार क्षेत्र और कामकाज के तरीके पर सवाल उठने लगे हैं। विपक्षी दलों को एक बार फिर केंद्र सरकार पर निशाना साधने का मौका मिल गया है। इस बहाने दूसरे राज्यों के राज्यपालों के मुख्यमंत्रियों से टकराव की सूची भी पेश की जाने लगी है। दरअसल, जबसे सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी केंद्र सरकार ने दिल्ली में चुनी हुई सरकार की शक्तियों को उपराज्यपाल के हाथों में केंद्रित करने का कानून बनाया है, तबसे न केवल आम आदमी पार्टी, बल्कि तमाम विपक्षी दल हमलावर हैं।अब पंजाब के राज्यपाल ने एक तरह से चुनी हुई सरकार को अपदस्थ करने की खुली धमकी दे दी है। यह अलग बात है कि राज्यपाल को यह फैसला लेते वक्त ठोस व्यावहारिक कारण बताने पड़ेंगे, मगर इससे यह ध्वनि गई है कि वे केंद्र सरकार के इशारे पर और पार्टी प्रवक्ता की तरह काम करते हैं। राज्यपाल जब सक्रिय राजनेता की तरह काम करने लगते हैं, तो ऐसे सवाल उठते ही हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पंजाब में मादक पदार्थों की तस्करी और कानून-व्यवस्था से जुड़े जवालों के जवाब लोग चाहते हैं। ये दोनों मुद्दे आम आदमी पार्टी ने विधानसभा चुनाव में प्रमुखता से उठाए थे। यह भी छिपी बात नहीं है कि भगवंत सिंह मान के सूबे की कमान संभालने के बाद वहां आपराधिक गतिविधियां बढ़ी हैं। वर्षों से दबी खालिस्तान की मांग एक बार फिर सिर उठाती देखी गई है। मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक नहीं लग पाई है, जिसके चलते वहां के युवाओं को नशे की गिरफ्त से बाहर निकालना अब भी चुनौती है। अगर इन मुद्दों पर राज्यपाल सरकार के कदमों के बारे में जानना चाहते हैं, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। मगर राज्य की कानून-व्यवस्था के बारे में राज्यपाल को जानने का एक तरीका होता है, उसे छोड़ कर उनसे धमकी भरे अंदाज की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

किसी को दुःख देकर अपनी जिंदगी सम्हालने का भाव आये तो निश्चित समझना कि तुम्हारा विनाश निश्चित है: निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

आगरा. शाबाश इंडिया

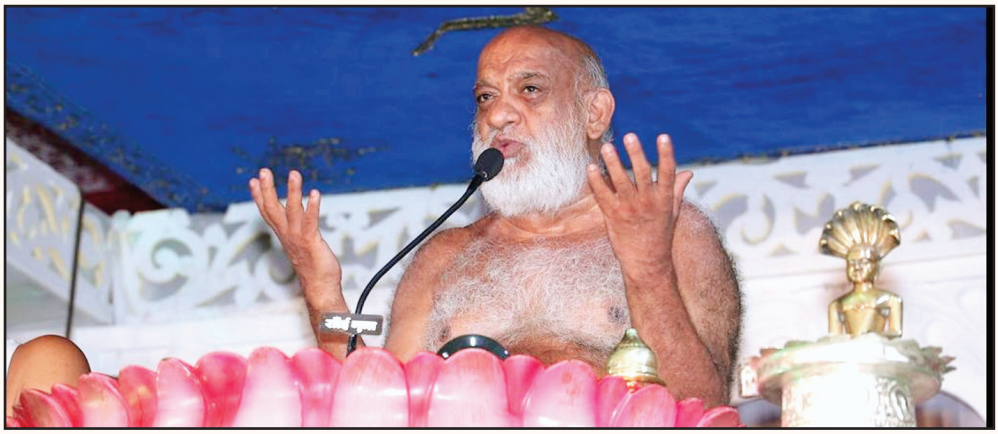

किसी का सहयोग लेने से हमारा पुण्य घटता है, शक्तियाँ घटती है, घाटा होता है। किसी की वस्तु पर नियत खराब करने से हमारा पाप बढ़ता है, अशुभ बढ़ता है। किसी की वस्तु को छीनने में हम उस दशा में पहुँच जाते है जहाँ हम किसी कार्य करने लायक नही रहते। किसी की कोई वस्तु चाहे कोई भी हो, उसको दुःख देखकर छीनना, नियम से स्वयं का विनाश करना है, जो दुःखी होता है उसका नाश नही होता, जो दुख देता है उसका नाश होता है। अपनी जिंदगी में कितनी भी आवश्यकता पड़ जाए कभी भी दूसरी की वस्तु को छीनने का भाव आये, सीधा नरक गति के बन्ध का कारण है। किसी को दुःख देकर अपनी जिंदगी सम्हालने का भाव आये तो निश्चित समझना इस समय मुझे नरक गति का बन्ध हो रहा है। इससे बड़ा और एक निकृष्ट भाव और होता है जो नही चाहिए लेकिन इसके पास नही रहना चाहिए। कभी तुम्हारे लिए इस तरह का भाव आये तो समझना तुम निगोद की तैयारी कर रहे हो। मेरे जीवन मे जब कोई संकट आये तो कोई न कोई मेरी सहायता करे, समझना हमारा इतना पुण्य क्षय हो जाता है जितना एक वर्ष में क्षय होता है। सहयोग लेना और सहयोग मांगना अपने पुण्य का क्षय करना है, भगवान का, गुरु का, माँ-बाप किसी का भी नही सहयोग नही लेना। राजा दो प्रकार के होते है एक राजा को पिता से राजगद्दी मिलती है और दूसरा अपने पुण्य से राजगद्दी प्राप्त कर लेता है क्योंकि उसने पूर्व भव में ये भावना भायी होगी कि मुझे किसी का भी सहयोग न लेना पड़े। भक्ति यह नही है कि गुरु तुम्हारे दरवाजे आ गए, लेकिन गुरु को बुलाने के लिए जो उत्साह कि कल जरूर आएंगे। जिस समय तुम्हारे मन मे ये भाव आया मुझे मुनि महाराज नही दिख रहे है, चलते फिरते तीरथ दिख रहे है, बस वही है सातिशय पुण्य है, यही है तुम्हारी ऊपर की कमाई और मुनिराज दिख रहे है तो वेतन की कमाई समझना। वेतन सीमित होता या असीम और ऊपर की कमाई असीम। अनुभूति सत्य की करना है और भक्ति उसकी करना है तुम दे सको, तुम्हारे द्वारा, अतिशयोक्ति मत कहना ये भक्ति का पैटर्न है। सच्चे आदमी की यही लक्षण है कि गुणवान होकर के भी अपने आप को गुणवान नही मानता। मुनिराज प्रतिक्रमण में कहे मैं पापी हूँ कभी भूलकर भी नही मान लेना। संसार मे सबसे ज्यादा झूठ बोलता है जैन मुनि। कभी किसी मुनि को बुखार आ रहा हो और तुमने पूछा कैसे हो, उन्होंने कहा ठीक हूँ। हाथ से चेक करके देखा तो 106त बुखार है। स्वयं के संकटो के मामलों में सदा साधु झूठ बोलता है क्योंकि वो अपने आपको बीमार मानता ही नही है, ये शरीर बीमार है मैं नही क्योंकि मैं तो आत्मा हूँ। चौबीस घण्टे में एक मंत्र दे रहा हूँ मुझे किसी का सहारा न लेना पड़े ,ये साधना करो, ये तपस्या करो। क्यों बनना चाहते है आप सिद्ध भगवान क्योंकि वे बिना श्वास के, बिना जल के, बिना रोटियों के जिंदा रहते है और सबसे बड़ा सुख वही है जो किसी का सहारा नही लेता है। संसार मे सबसे ज्यादा दुखी वही है जो हर चीज में सहारे पर जी रहा है। भावना भाओ कि हम वो जिंदगी चाहते है जिसमे किसी का सहारा न लेना पड़े, यही भावना एक दिन हमे सिद्ध दशा में पहुँचा देगी।

संकलन- शुभम जैन 'पृथ्वीपुर'

जीवन पानी की बूंद के समान, आयुष्य पूर्ण होने से पहले धर्म कर लो : हिरलप्रभाजी म.सा.

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। शरीर से संसार बढ़ता है जबकि आत्मा संसार को घटाती है। शरीर से हम कर्म बंध भी कर सकते ओर कर्म क्षय भी कर सकते है। ये हमारे हाथ में है कि हम शरीर का उपयोग किस तरह करते है। आत्मा को हल्का या भारी बनाना भी खुद के हाथ में है। कर्म निर्जरा कर आत्मा को हल्का बना सकते है। ये विचार भीलवाड़ा के चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में सोमवार को श्री अरिहन्त विकास समिति के तत्वावधान में मरूधर केसरी मिश्रीमलजी म.सा. की 133वीं जयंति एवं एवं लोकमान्य संत शेरे राजस्थान रूपचंदजी म.सा. की 96वीं जयंति के उपलक्ष्य में अष्ट दिवसीय गुरू द्वय पावन जन्मोत्सव के पांचवें दिन मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में मधुर व्याख्यानी डॉ. दर्शनप्रभाजी म.सा. ने धर्मसभा में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जिन बनने के लिए निज को जानना होगा। निज की पहचान के बिना हम जैनत्व को नहीं समझ सकते। चार शरणा स्वीकार करने पर हम निज से जिन बन सकते है। हम चाहे तो पाप बढ़ा भी सकते ओर चाहे तो घटा भी सकते है। साध्वीश्री ने कहा कि शारीरिक शक्ति से महत्वपूर्ण आत्मशक्ति व मनोबल है। जिनका आत्मबल मजबूत होता है वह हर सफलता प्राप्त कर सकता है। महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. ने तप साधना कर रहे तपस्वियों को साधुवाद देते हुए कहा कि जीवन के कल्याण के लिए तप साधना जरूरी है। उन्होंने पूज्य गुरूदेव मरूधर केसरी मिश्रीमलीजी म.सा. द्वारा श्रमण संघ गठित करने एवं उसे

हमारा आत्मबल मजबूत तो हासिल कर सकते हर सफलता: दर्शनप्रभाजी म.सा.

मजबूत बनाने के लिए किए गए कार्यों की चर्चा करते हुए कहा गुरूदेव ने सम्प्रदायवाद से उपर उठकर इस बात का प्रयास किया कि सारे श्रावक-श्राविका एक हो जाए। धर्मसभा में तरूण तपस्वी हिरलप्रभाजी म.सा. ने कहा कि जीवन पानी की बूंद के समान है जब तक प्राणवायु चल रही है इसका उपयोग कर लो। हमारी आयु प्रतिपल घट रही है कब आयुष्य पूर्ण हो जाए कोई नहीं जानता। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन उठते ही माता-पिता के चरणस्पर्श करने की परम्परा भी खत्म होती जा रही जबकि इससे पुण्याजर्न होता है। हमारे भावों में पाप आने पर भी कर्मबंध होना शुरू हो जाते है। उन्होंने जन्मदिन मनाने के लिए आधी रात केक काटने ओर खाने-पीने की प्रथा को जैन दर्शन के विपरीत बताते हुए कहा कि हमारे धर्म में तो रात में पानी पीना भी मना है ओर हम रात में जश्न मना रहे है। हम बच्चों को जैनत्व के संस्कार नहीं देंगे तो वह सुश्रावक-सुश्राविका कैसे बनेंगे। उन्होंने गुरू आराधना में गीत की भी प्रस्तुति दी। धर्मसभा में आदर्श सेवाभावी दीप्तिप्रभाजी म.सा. ने भजन ह्यमैं तो जपू सदा तेरा नाम दयालु दया करोंह्ण की प्रस्तुति दी। धर्मसभा में आगम मर्मज्ञा डॉ. चेतनाश्रीजी म.सा. एवं तत्वचिंतिका डॉ. समीक्षाप्रभाजी म.सा. का भी सानिध्य रहा। धर्मसभा में सुश्रावक रतन संचेती ने भजन की प्रस्तुति दी। धर्मसभा का संचालन युवक मण्डल के मंत्री गौरव तातेड़ ने किया। अतिथियों का स्वागत श्री अरिहन्त विकास समिति द्वारा किया गया। इस अवसर पर लक्की ड्रॉ के माध्यम से चयनित 11 भाग्यशाली श्रावक-श्राविकाओं को पुरस्कृत किया गया। लक्की ड्रॉ के लाभार्थी श्री गुलाबचंदजी राजेन्द्रजी सुकलेचा परिवार रहा। धर्मसभा में भीलवाड़ा शहर एवं आसपास के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे सैकड़ो श्रावक-श्राविकाएं मौजूद रहे।

रूप रजत विहार में तप साधना की लगी होड: रूप रजत विहार में पहली बार हो रहे चातुर्मास में तपस्या की गंगा प्रवाहित हो रही है। सोमवार को धर्मसभा में सुश्राविका निर्मला मुरड़िया ने 12 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। तपस्वी की अनुमोदना में हर्ष-हर्ष, जय-जय के स्वर गूंजायमान हो उठे। गुरू द्वय पावन अष्ट दिवसीय जन्मोत्सव के तहत तेला तप साधना करने वाले तपस्वियों में से कुछ श्रावक-श्राविकाओं पारणा नहीं करके तपस्या गतिमान रखते हुए सोमवार को पांच-पांच उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। इनके अलावा कई श्रावक-श्राविकाए उपवास, एकासन, आयम्बिल आदि तप साधना भी कर रहे है। धर्मसभा में पूज्य दर्शनप्रभाजी म.सा. ने कहा कि हमने 12 से 19 सितम्बर तक मनाए जाने वाले पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की तैयारियां शुरू कर दी है।

बीमारी से तीन फायदे गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। गुरुमां विज्ञाश्री माताजी ने श्रद्धालुओं को संबोधन देते हुए कहा कि - कभी कभी बीमारी भी बहुत अच्छी होती है । बीमारी से पहला फायदा तो यह कि अहंकार टूटता है । अच्छे - अच्छे गामा पहलवान , जैसी हस्तियां बीमारी में ढेर हो जाती है। दूसरा फायदा आदमी को पहली बार परिजनों की कद्र मालूम होती है। तीसरा फायदा अपने पराये का ज्ञान होता है । बीमारी स्वार्थ और प्रेम का भेद कराती है। बीमारी प्रभु की याद दिलाती है। गुरु माँ के मुखारविन्द से आज की शान्तिधारा करने का सौभाग्य महावीर जी सेवा वाले , धर्मचन्द पराणा वालों ने प्राप्त किया । गुरु माँ के सान्निध्य में श्री शांतिनाथ मंडल विधान रचाने का सौभाग्य नेमीचंद पाटनी निवाई वालों ने प्राप्त किया। शाम को प्रभु भक्तों ने मिलकर शांतिप्रभु महाआरती कर स्वयं को धन्य किया।

यूरिन में प्रोटीन आ रहा है तो क्या करना चाहिए जिससे की प्रोटीन आना बंद हो जाए ?

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।
9828011871

यूरिन में प्रोटीन आने के कई कारण हो सकते है, यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। महिला के गर्भवती होने की अवस्था मे प्रोटीन यूरिन से आ सकता है, यह हानिकारक है। यूरिन से जुड़ी हर समस्या किडनी से जुड़ी होती है। यूरिन के साथ प्रोटीन का निकलना बताता है कि किडनी में दिक्कत है। असल में ये प्रोटीन रक्त में एल्ब्यूमिन नामक प्रोटीन होता है। जो ब्लड से यूरिया और क्रिएटिनिन जैसे पदार्थों को साफ करने का काम करता है। इतना ही नहीं, ये एल्ब्यूमिन प्रोटीन ब्लड में मौजूद यूरिया और क्रिएटिनिन को यूरिन के जरिये ही शरीर से बाहर निकालता है, लेकिन जब किडनी प्रोटीन का फिल्टरेशन नहीं कर पाती तो ये यूरिन के साथ बाहर आने लगता है। एल्ब्यूमिन एक साधारण प्रोटीन है, जो किडनी की कार्य क्षमता में कमी आने या फिर किडनी होने वाली किसी बीमारी के कारण बाहर आने लगता है। इसका पता हालांकि ब्लड यूरिया और सीरम केराटिनिक टेस्ट से चलता है, लेकिन यूरिन से प्रोटीन के बाहर आने का संकेत शरीर को पहले ही मिलने लगता है। डॉक्टर को तुरन्त दिखाये, अधिक समय तक खड़े नही रहे, सोकर आराम की अवस्था मे रहें, डॉक्टर से सम्पर्क कर तत्काल इलाज ले।

रक्षाबंधन पर्व पर विशेष: भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन

विजय कुमार जैन राघौगढ़ म.प्र.

भारतीय संस्कृति में पर्वों का प्राचीनकाल से विशेष महत्व रहा है। प्रत्येक त्यौहार के साथ धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं का संयोग प्रदर्शित होता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी अपना संदेश आम जनता तक पहुँचाने के लिये त्यौहारों एवं मेलों का मंच के रूप में उपयोग होता था। हम चर्चा कर रहे हैं ऐसे ही पर्व रक्षाबंधन की। रक्षाबंधन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रमुख त्यौहार माना जाता है जो श्रावण मास पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपनी रक्षा के लिये भाई को राखी बांधती है। यह पर्व मात्र रक्षा का संदेश नहीं देता, अपितु प्रेम, समर्पण, निष्ठा व संकल्प के द्वारा हृदयों को भी बांधने का वचन देता है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है ''मयि सर्व मिदंप्रोक्तं सूत्रे मणिगणाइव'' अर्थात सूत्र अविच्छन्नता का प्रतीक है क्योंकि सूत्र/धागे बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की तरह रक्षासूत्र भी लोगों को जोड़ता है। पुराणों में रक्षाबंधन का उल्लेख मिलता है। रक्षा हेतु इन्द्राणी ने इन्द्र सहित देवताओं की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा और इन्द्र ने राक्षसों से युद्ध में विजय पायी। एक कथा के अनुसार राजा बलि को दिये वचन अनुसार भगवान विष्णु बैकुंठ छोड़कर बलि के राज्य की रक्षा के लिये चले गये। तब देवी लक्ष्मी ने ब्राह्मणी का रूप धर श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि की कलाई पर पवित्र धागा बांधा, उनके कहने पर बलि ने भगवान विष्णु से बैकुंठ लौटने की विनती की। रावण की बहन शूर्पणखा लक्ष्मण के द्वारा नाक काटने के पश्चात रावण के पास पहुंची और खून से मैली साड़ी का एक छोर रावण की कलाई में बांध दिया और कहा भैया जब-जब आप अपनी कलाई को देखोगे आपकी अपनी बहन का अपमान याद आयेगा और मेरी नाक काटने बालों से तुम बदला ले सकोगे। भगवान श्री कृष्ण के हाथ में चोट लगने पर एक बार द्रौपदी ने अपनी चुनरी का किनारा फाड़ कर घाव पर बांध दिया था। दुशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण प्रयास इसी बंधन के प्रभाव से असफल हुआ। श्री कृष्ण ने द्रौपदी की रक्षा की। युधिष्ठिर ने एक बार श्रीकृष्ण से पूछा कि वह महाभारत के युद्ध में कैसे बचेंगे , जवाब में श्री कृष्ण ने कहा राखी का धागा ही तुम्हारी रक्षा करेगा। सिकन्दर व पौरस के युद्ध के पूर्व रक्षा सूत्र का आदान प्रदान हुआ था। दोनों ने रक्षा सूत्र की मयार्दा का पालन किया था। मुगल काल में मुगल सम्राट हुमायूँ चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण करने बढ़ा तो राणा सांगा की विधवा कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजकर अपनी रक्षा का वचन लिया। हुमायूँ ने इसे स्वीकार करके चित्तौड़ पर आक्रमण का विचार मन से निकाल दिया और आगे राखी का वायदा निभाने के लिये चित्तौड़ की रक्षा हेतु गुजरात के बादशाह से भी युद्ध किया। स्वाधीनता आन्दोलन में भी बहनों ने अपने भाइयों को राखी बांधकर देश को आजाद कराने का वचन लिया। सन 1905 में बंग-भंग आन्दोलन का शुभारंभ एक-दूसरे को रक्षा सूत्र बांधकर हुआ। आजादी के आन्दोलन की एक घटना चन्द्रशेखर आजाद से जुड़ी हुई है। आजाद एक तूफानी रात शरण लेने एक विधवा के घर पहुंचे। पहले तो उसने उन्हें डाकू समझकर शरण देने से मना कर दिया। बाद में यह पता चलने पर कि वह क्रांतिकारी आजाद है तो ससम्मान उन्हें घर के अंदर ले गई। बातचीत के दौरान आजाद को पता चला कि उस विधवा को गरीबी के कारण जबान बेटी की शादी हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ रही है।। यह जानकर आजाद को बहुत दुख हुआ। उन्होंने विधवा को प्रस्ताव दिया कि मेरी गिरफ्तारी पर पाँच हजार रुपये का इनाम है, तुम मुझे अंग्रेजों को पकड़वा दो और उस इनाम से बेटी की शादी कर देना, यह सुनकर विधवा रो पड़ी व कहा भैया तुम देश की आजादी हेतु अपनी जान हथेली पर रखकर चल रहे हो और न जाने कितनी बहू-बेटियों की इज्जत तुम्हारे भरोसे है, मैं हरगिज ऐसा नहीं कर सकती। यह कहते हुए उसने एक रक्षा सूत्र आजाद के हाथ पर बांधकर देश सेवा का वचन लिया। सुबह जब विधवा की आँख खुली तो आजाद जा चुके थे और तकिये के नीचे पाँच हजार रुपये रखे हुए थे, साथ ही उसके साथ एक पर्चा रखा था जिस पर लिखा था कि अपनी प्यारी बहन हेतु एक छोटी सी भेंट -आजाद। भारत में रक्षाबंधन का त्यौहार अलग अलग तरीकों से अपनी मान्यता अनुसार मनाया जाता है। मुंबई के समुद्री क्षेत्रों में नारियल पूर्णिमा या कोकोनट फुलमून के नाम से मनाया जाता है। उत्तराखंड के चम्पावत जिले के देवीधूरा में राखी पर्व पर बाराहीदेवी को प्रसन्न करने के लिये पाषाणकाल से ही पत्थर युद्ध का आयोजन किया जाता है। इस युद्ध में आज तक कोई भी गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ। जैन धर्म में रक्षाबंधन पर्व का विशेष महत्व है। प्राचीन काल में मुनि अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों पर असुरों द्वारा हस्तिनापुर में उपसर्ग किया। सभी मुनियों को बंदी बनाकर बलि देने का निर्णय लिया। मुनि विष्णु कुमार को इसका पता चला तो उन्होंने अपनी वैक्रिया ऋद्धि के द्वारा असुर शक्तियों को निर्बल किया तथा 700 मुनियों की मुनि अकम्पनाचार्य सहित रक्षा की। मुनियों की रक्षा की स्मृति में यह रक्षाबंधन पर्व मनाया जाता है। 700 जैन मुनियों की रक्षा हुई थी, रक्षाबंधन पर्व का नाम करण जैनाचार्य संत शिरोमणी विद्या सागर जी के परम प्रभावक शिष्य निर्यातक मुनि सुधा सागर जी ''श्रमण संस्कृति रक्षा दिवस'' किया है इस दिन जैन मंदिरों में 700 मुनियों की रक्षा के उपलक्ष्य में श्रमण रक्षा विधान पूजन किये जाते है। सभी 700 जैन मुनियों का स्मरण कर उन्हें अर्घ चढ़ाये जाते हैं। मुनि सुधा सागर जी जिस तीर्थ या नगर में चातुर्मास करते हैं वहाँ श्रमण संस्कृति रक्षा विधान पूजन भक्ति भाव से उनके पावन सानिध्य की जाती है। 30 अगस्त को आगरा महानगर में श्रमण संस्कृति रक्षा विधान मुनि सुधा सागर जी ससंघ के पावन सानिध्य में भक्ति भाव से आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर धर्म और संस्कृति की रक्षा के प्रतीक रक्षासूत्र बांधते हैं। रक्षाबंधन पर्व की एक रोचक घटना हरियाणा के फतेहपुर गाँव की है। फतेहपुर में सन 1857 में एक युवक गिरधरलाल को रक्षाबंधन के दिन अंग्रेजों ने तोप से बांधकर उड़ा दिया। इस घटना के बाद ग्रामीणों ने गिरधरलाल को शहीद का सम्मान देकर रक्षाबंधन पर्व मनाना बंद कर दिया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर सन 2006 में इस गाँव के लोगों ने रक्षाबंधन पर्व पुनः मनाने का संकल्प लिया। रक्षाबंधन पर्व का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। यह पर्व हमारे सामाजिक परिवेश एवं मानवीय मूल्यों का अभिन्न अंग है। आज आवश्यकता है आडंबर के बजाय इस त्यौहार के पीछे छुपे हुए संस्कारों और नैतिक मूल्यों का सम्मान किये जाने की।

जैन सोशल ग्रुप राजधानी द्वारा शांति विधान मंडल विधान का आयोजन, श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर नेवटा में हुआ भव्य आयोजन

जयपुर। श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर नेवटा में साजों के साथ श्री शाति विधान मंडल पूजा का कार्यक्रम का आयोजन विधानाचार्य प्रकाश जैन के द्वारा भक्ति के साथ किया गया जिसमें ग्रुप के सदस्यों ने लाभ लिया।संस्थापक अध्यक्ष सुनील आरती पहाड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में सदस्यों ने आकर्षक व ज्ञानवर्धक धार्मिक हाउजी लिया। ग्रुप के सचिव पवन रीता पाटनी ने अवगत कराया कि प्रथम कलशाभिषेक व शातिं धारा का सोभाग्य समाज श्रेष्ठी व ग्रुप के अध्यक्ष प्रकाश लीला जितेश , रिचा व रिधान अजमेरा को, प्रथम रिद्धि सिद्धि कलश का सौभाग्य शिलांग निवासी प्रमुख समाजसेवी प्रकाश सरला पाटनी को, श्री कलश का सौभाग्य धर्मचंद सरिता पहाड़िया को, चतुषकौण कलशो का सौभाग्य अमित निधि छाबड़ा,धर्मचंद रुचि पाटनी, प्रकाश लीला अजमेरा,श्रीमती रेखा जैन एवं अमित रेशमा जैन को मिला। पूजन के पश्चात आरती का सौभाग्य राजेंद्र आशा सांधी को प्राप्त हुआ। शांति विधान पूजन में महिलाओं को सुंदर साड़ी पदम राजरानी गंगवाल मीठड़ी वालों ने वह ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष सुनील आरती पाहाड़ियो तथा पूजन में बैठने हेतु पुरुषों को धोती दुपट्टा संजय किरण अजमेरा द्वारा उपलब्ध कराए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने मे समन्वयक सुरेश शांति भौंचे, संयोजक रमेश बीना जैन व संजय सोनू डाकूडा तथा सहसंयोजक जितेंद्र प्रकाश मधु जैन , संजय मीनू जैन एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों तथा उपस्थित सदस्यों ने अपना भरपूर योगदान दिया। अन्त में अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा उपाध्यक्ष दिलीप टकसाली तथा सचिव पवन पाटनी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी के योगदान के लिए धन्यवाद व आभार ज्ञापित किया।

जैन तीर्थ नैनागिरि में भगवान पारसनाथ के 2800वां निर्वाण महोत्सव में उमड़ा श्रद्धा का जनसैलाब

हजारों श्रद्धालुओं ने महामस्तकाभिषेक कर चढ़ाया लाडू और किये दीप प्रज्ज्वलित

राजेश रागी/रत्नेश जैन. शाबाश इंडिया

बकस्वाहा, छतरपुर। तहसील अंतर्गत सुविख्यात श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि (बुन्देलखण्ड) में भगवान पारसनाथ का महामस्तकाभिषेक एवं 2800वां निर्वाण महोत्सव हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में विविध कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया गया , जिसमें भगवान पारसनाथ का हजारों श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से 2800 कलशों से महामस्तकाभिषेक, शांतिधारा कर लाडू चढ़ाया एवं 2800 दीपक प्रज्वलित कर महाआरती का सौभाग्य प्राप्त किया ।इस एतिहासिक कार्यक्रम में श्रद्धा व भक्तिभाव का दृश्य अदभुत रहा। न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन भोपाल तथा उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं अभा जैन पत्र संपादक संघ के अध्यक्ष शैलेंद्र जैन अलीगढ़ के मुख्य आतिथ्य में आयोजित इस महोत्सव में। जैन तीर्थ नैनागिरि के अध्यक्ष सुरेश जैन आईएएस ने तीर्थक्षेत्र का ऐतिहासिक परिचय और क्षेत्र पर स्थित उल्लेखनीय कार्यों तथा चल रहे व होने बाले कार्यों को बताया।इस अवसर पर बुंदेलखंड के अलावा देश के विभिन्न प्रांतो से आयें हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर महामस्तकाभिषेक, शांतिधारा व निर्वाण लाडू चढ़ाकर महाआरती तथा तीर्थ वंदना का सौभाग्य प्राप्त किया, जिसमें मुख्य रूप से शोभित कुमार गंगवाल अहमदाबाद, पीयूष जैन सतना, संतोष कुमार जयकुमार बैटरी वाले सागर, अभिलाष जैन बम्हौरी वाले भोपाल, रविंद्र कुमार रामराजा कंस्ट्रक्शन पृथ्वीपुर, अनिल जैन भोपाल, शैलेंद्र जैन अलीगढ़ अध्यक्ष उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी, सौरभ बूंद सागर, ऋषभ कुमार ऋषि कुमार सुनवाहा वाले बकस्वाहा, समोसारण यात्रा संघ महेंद्र कुमार एलआईसी इंदौर, मनीष कुमार कमल कुमार पथरिया, हुकमचंद कोमलचंद दीपक कुमार कदवां बण्डा ,जितेंद्र मृगनयनी टीकमगढ़, आशीष जैन महावीर एक्स-रे दमोह, ब्रह्म. विद्या दीदी, प्रदीप कुमार सागर, आशीष कुमार रजपुरा, जयकुमार पुरा दमोह, इंजी. उमेश छतरपुर, डा.श्रेयांस जैन ककरवाहा परिवार आदि शामिल रहे। इस अवसर पर लाडू सजाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें क्षेत्रीय विभिन्न नगरों के महिला संगठन व महिलाओं ने हिस्सा लिया, जिसमें प्रथम स्थान विद्यासागर महिला मंडल दलपतपुर, द्वितीय कु. रजनी जैन दलपतपुर, तृतीय स्थान श्रीमती नेहा डॉ. राजेंद्र दलपतपुर के साथ ही 12 सांत्वना पुरस्कार तीर्थ क्षेत्र कमेटी द्वारा प्रदाय कर पुरुस्कृत किया गया। जैन तीर्थ नैनागिरि कमेटी के मंत्री देवेन्द्र लुहारी ने बताया कि 23वें तीर्थंकर भगवान पारसनाथ का 2800वां निर्वाण महोत्सव इस बार विशेष रूप से वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की निर्वाण भूमि नैनागिरि में 2800 कलशों से विशेष महामस्तकाभिषेक व निर्वाण लाडू और दीप प्रज्वलित करने के साथ आयोजित करने का उद्देश्य रहा कि भगवान पारसनाथ का 2800 वर्ष पूर्व बुंदेलखंड के तीर्थों में इस इकलौते जैन तीर्थ पर कई बार समवशरण आया और दिव्य देशना / उपदेश हुआ । उनकी इस स्मृति को स्थाई बनाए रखने हेतु चौवीसी जिनालय में उनकी तदाकार शरीर के अनुसार दुनिया की इकलौती मनोज्ञ आकर्षक भव्य प्रतिमा यहां विराजमान कराई गई और पारस सरोवर में समवशरण रचना का मंदिर संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा आशीर्वाद से निर्मित कराया गया और उन्ही के ससंघ सानिध्य में प्रतिष्ठा कराई गई , जल मंदिर के समक्ष पारसनाथ के बारह भव को चित्रांकित कर भव्य विशाल मानस्तंभ किया गया,इसके साथ ही गिरिराज की 14 एकड़ भूमि में विशाल भव्य देशना स्थली बनाई जा रही है, जिसके उपक्रम में 04 दिसम्बर से त्रिमूर्ति जिनालय की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस मौके पर स्मृति स्वरूप धातु का दीप प्रदाय कर सभी अतिथि, दानदाता, सहयोगी, समाजसेवी, तीर्थ व मंदिर कमेटी के प्रतिनिधि व तीर्थ भक्तों का अभिवादन , धन्यवाद आभार जैन तीर्थ नैनागिरि कमेटी के ट्रस्ट अध्यक्ष सुरेश जैन आईएएस, मंत्री राजेश रागी व प्रबंध अध्यक्ष डा. पूर्णचंद्र व मंत्री देवेन्द्र लुहारी सहित ट्रस्ट व प्रबंध समिति के पदाधिकारी व सदस्यों ने किया।

पांड्या की स्मृति में छात्र छात्राओं को दिए स्कूल बैग

सुजानगढ़. शाबाश इंडिया

स्थानीय पांड्या धर्मशाला में स्वर्गीय आनंदीलाल जी पांड्या सुजानगढ़ निवासी गुवाहाटी प्रवासी की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र शैलेंद्र पुत्रवधु श्रीमती इंद्रा जी पांड्या परिवार के सौजन्य से सुजलांचल विकास मंच समिति के तत्वावधान में नगर की विभिन्न आंगनबाड़ी केंद्र व रायसाहब चांदमल पांड्या उच्च प्राथमिक विद्यालय नंबर 10 के 141 छात्र छात्राओं को स्कूल बैग वितरण का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का आगाज आगंतुक अतिथियों ने किया। समिति के उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद पाटनी ने आयोजक विषयक की जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दिगम्बर जैन समाज के संरक्षक खेमचंद बगड़ा ने स्वर्गीय सरावगी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दीन हीन असहाय जरूरतमंद की सेवा में सरावगी हर समय तत्पर रहते थे व समिति निरंतर नगर में सामाजिक सरोकार के उल्लेखनीय कार्य कर रही है जिसके लिए व प्रशंसा की पात्र है। मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री पारसमल बगड़ा ने उपस्थित छात्र छात्राओं से कहा कि कोई भी कार्य मुश्किल नही होता उसको करने की इच्छा शक्ति मन में होनी चाहिए महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन में सफलता हासिल कर देश व समाज की कीर्ति को आगे बढ़ाना चाहिए।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380
दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com